जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

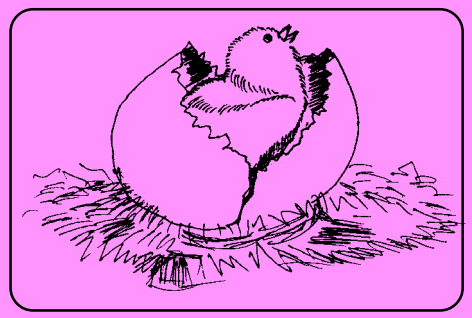

दो शरारती लड़के मुर्गी के अंडों को कृत्रिम रूप से सेने के लिए एक गरम डिब्बा यानि इनक्यूबेटर बनाते हैं। उनको किन-किन दिक्कतों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और बाद में वो कैसे अपनी मंज़िल तक पहुंचते हैं इसकी जबरदस्त दास्तां। बच्चे इस सर्वश्रेष्ठ रूसी कहानी को कभी नहीं भूलेंगे।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए B - 35 Price : 10 Rupees

मुर्गी के चूज़े

निकोलाई नोसोव

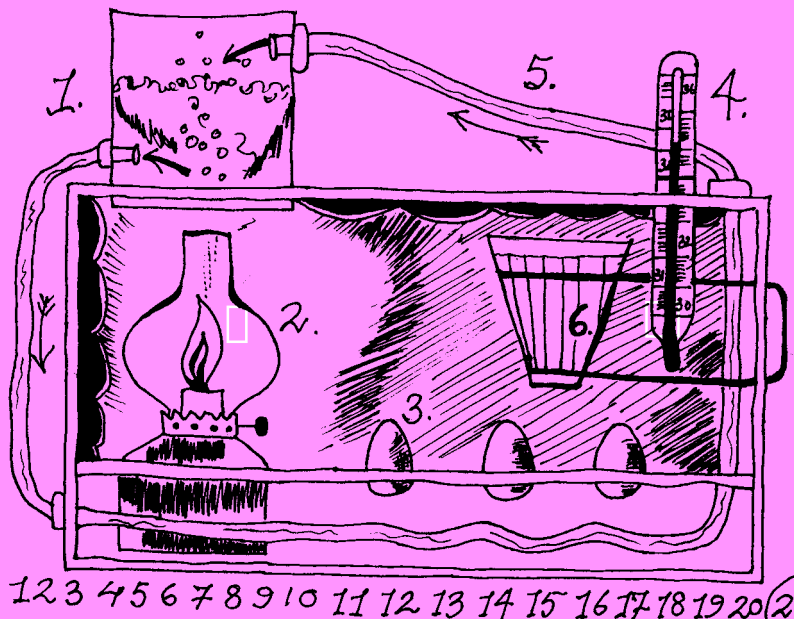

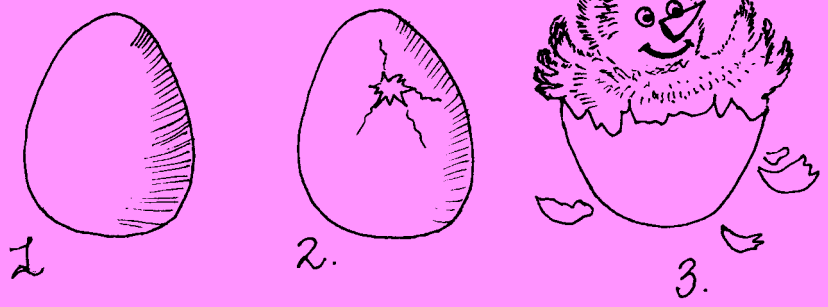

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

मुर्गी के चूज़े : *Jolly Family*
निकोलाई नोसोव : *Nikolai Nosov*
अनुवादः अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकनः शर्मिष्ठा सान्याल
(जिर्योजी यूडिन के मूल चित्रों पर आधारित)

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket , New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

मुर्गी के चूज़े

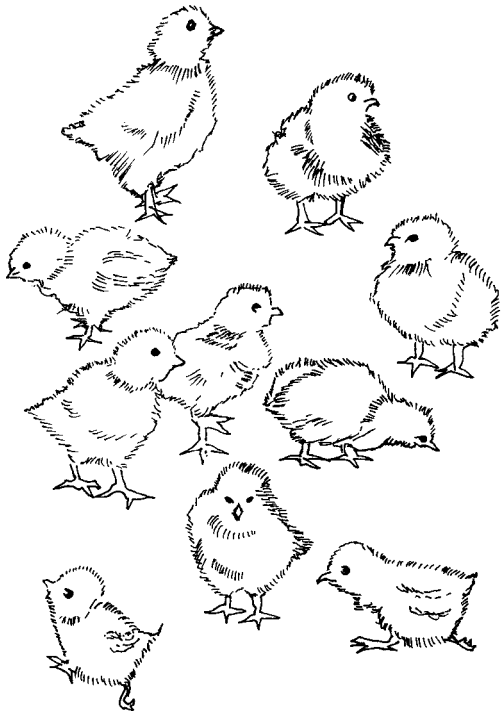

निकोलाई नोसोव

मुर्गी के चूज़े

एक दिन जब मैं मिश्का के घर गया तो वह एक किताब पढ़ने में मगन था। उसने मेरे कदमों की आवाज़ भी नहीं सुनी। जब मैंने ज़ोर से दरवाज़ा बंद किया तभी उसने अपना सिर उठा कर देखा।

''अरे तुम हो निकोलाजी,'' उसने मुस्कुराते हुए कहा। मिश्का कभी भी मुझे मेरे सही नाम से नहीं बुलाता है। वह मेरे लिए अजीबो-गरीब नाम सोचता रहता है। वह मुझे निकोल, मिकोला, मिकुला सेल्यानोविच या मिक्लूखो माकलाई आदि नामों से बुलाता है। परंतु, जब तक मिश्का मुझे चाहता है तक तक मैं इस बात का बुरा नहीं मानता हूं।

मिश्का जो पुस्तक पढ़ रहा था उसका नाम था ***कुक्कुट पालन*** । उसके कवर के ऊपर एक मुर्गे और एक मुर्गी का चित्र बना था और अंदर तमाम मुर्गी के दबड़ों के चित्र थे।

''मुझे लगता है कि तुम कोई विज्ञान के विषय की किताब पढ़ रहे हो,'' मैंने कहा।

''विज्ञान की बातें कितनी रोचक होती हैं। यह कोई फालतू की परी-कथा थोड़ी ही है। इसमें लिखी हरेक बात सच और उपयोगी है।

मिश्का के लिए यह आवश्यक है कि वह जो भी काम करे वह उपयोगी हो। एक बार मिश्का यूनीवर्सिटी में पढ़ाई जाने वाली एडवांस त्रिकोणमिती की पुस्तक खरीद लाया। जब उसने उसे पढ़ा तो उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। वह किताब तब से उसकी मेज़ के एक कोने में पड़ी है और मिश्का के होशियार होने का इंतज़ार कर रही है।

उसने नई किताब में एक निशान लगाया और उसे बंद कर दिया। फिर उसने कहा, ''अगर हम चाहें तो अपने घर में एक गर्म-डिब्बा (इंक्यूबेटर) बनाकर मुर्गी के चूज़े पैदा कर सकते हैं। तुम्हें शायद पता नहीं हो, कि जिस समय मुर्गियां अंडे सेती हैं उस वक्त वो नए अंडे नहीं देती हैं। और अगर हम कत्रिम तरीके से अंडों को सेने का काम कर सकें तो मुर्गियां लगातार अंडे देने के लिए मुक्त हो जाएंगी।

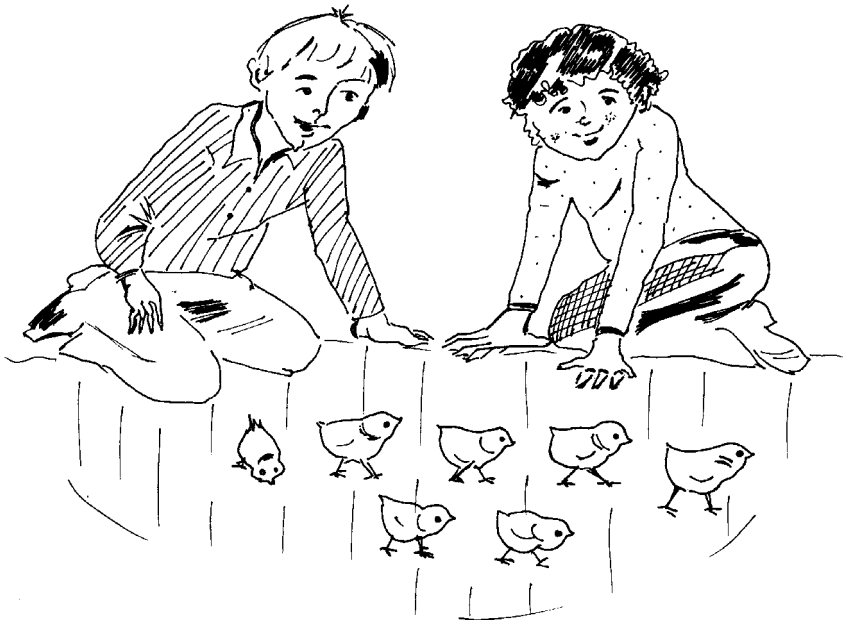

इससे हमारे देश में अंडों के उत्पादन में ज़बरदस्त बढ़ौत्तरी होगी।''

''मुझे लगता है कि इसे करना कोई आसान काम न होगा,'' मैंने अपनी शंका प्रकट की।

''देखो, यह कितना उपयोगी काम होगा। हम अपने देश की प्रगति में हाथ बंटा पाएंगे,'' मिश्का ने कहा, ''किताब में इंक्यूबेटर बनाने की पूरी विधि बताई गई है। हमें बस अंडों को इक्कीस दिनों तक गर्म रखना होगा और फिर अंडों में से चूज़े खुद बाहर निकल आएंगे।''

राष्ट्रीय उपयोग के इस महत्वपूर्ण काम में मैंने भी मिश्का का हाथ बंटाने की सोची। छोटे-छोटे चूज़ों की बात मेरे दिल को बड़ी अच्छी लगी। वैसे भी मुझे चिड़ियों और जानवरों का बहुत शौक है। मैंने और मिश्का ने इसीलिए स्कूल के प्रकृति क्लब में अपना नाम दर्ज़ करवा लिया था। परंतु उसके तुरंत बाद हम दोनों एक स्टीम-इंजन बनाने में बेहद व्यस्त हो गए और प्रकृति-क्लब के मॉनीटर वित्या ने हमारे नामों को क्लब की सूची में से काटने की धमकी दी। हमने वित्या से एक और मौका देने की अपील की।

''हम रसोईघर के एक कोने में ही अपना गर्म-डिब्बा (इंक्यूबेटर) बना लेंगे। और जब नन्हे-नन्हे चूज़े बाहर आएंगे तो उन्हें वहीं खाना खिला दिया करेंगे,'' मिश्का ने कहा।

''हमारे पास कुछ और खास तो करने के लिए है नहीं, इसीलिए चलो यही करते हैं,'' मैंने कहा।

मुसीबतें और मुश्किलें

''हमें शायद इंक्यूबेटर बनाने की ज़रूरत ही न पड़े। हम मुर्गी के अंडों को कढ़ाई में रख कर उसे चूल्हे की हल्की आग पर रख देंगे,''

मैंने सुझाव दिया।

''पागलों जैसे बात मत करो,'' मिश्का चिल्लाया, ''थोड़ी देर में चूल्हे की आग बुझ जाएगी और सब अंडे खराब हो जाएंगे। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि इंक्यूबेटर में अंडे एक निश्चित तापमान पर गर्म रहते हैं - यह ताप 102 डिग्री फैरनहाइट होता है''।

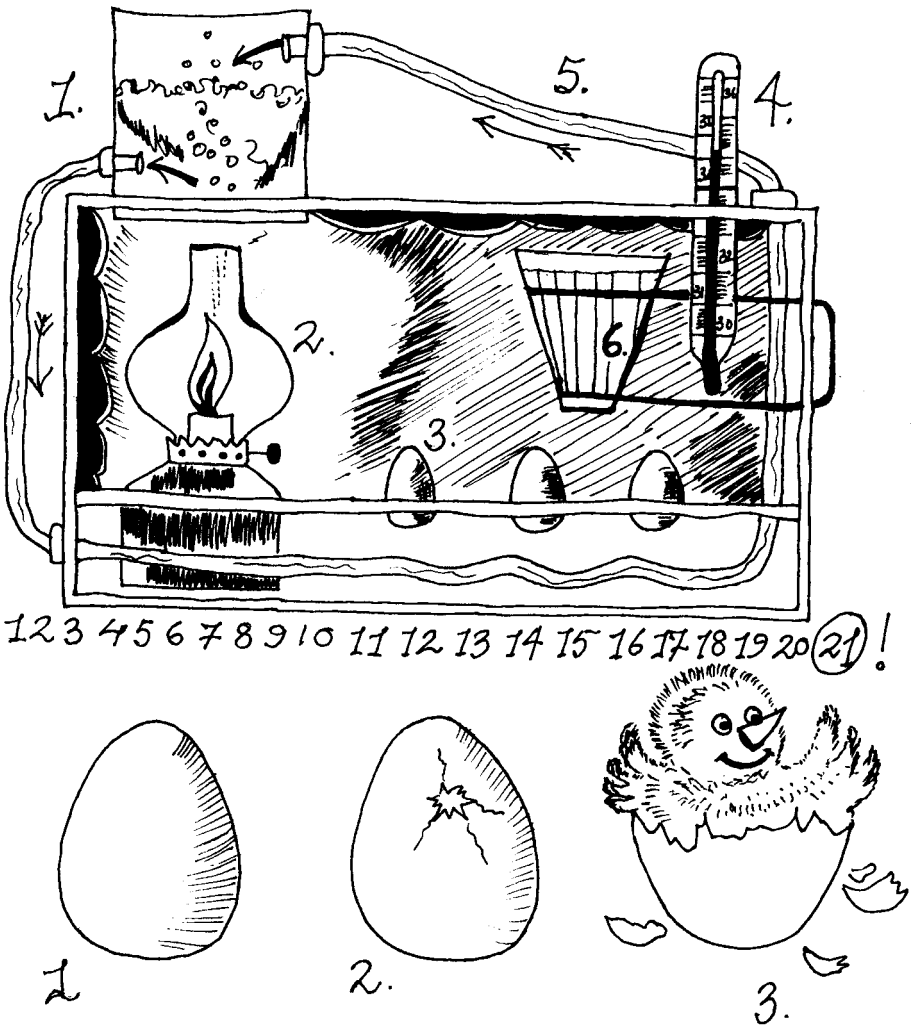

''पर 102 डिग्री ही क्यों?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

''क्योंकि जब मुर्गी अंडे से रही होती है तब उसका भी यही तापमान होता है,'' मिश्का ने एक विशेषज्ञ के लहज़े में कहा। फिर उसने किताब में बने चित्र को दिखाते हुए कहा, ''देखो इंक्यूबेटर देखने में इस प्रकार का होगा। उसमें एक पानी की टंकी होगी। टंकी में से पाइॅप अंडे वाले डिब्बे में जाएंगे। टंकी को नीचे से गर्म किया जाएगा। टंकी से गर्म पानी पॉइपों में से होकर अंडों वाले डिब्बे में जाएगा और अंडों को गर्म रखेगा। और देखो, यहां एक तापमापी यानि थर्मामीटर भी होगा, जिससे कि हम तापमान पर नज़र रख सकें।''

''पर हम टंकी कहां से लाएंगे?''

''अरे टंकी की क्या ज़रूरत है, हम एक डिब्बे से ही काम चला लेंगे।''

''और हम उसे गर्म कैसे करेंगे?''

''मिट्टी के तेल के लैम्प से या फिर किसी चिमनी से। मैंने एक चिमनी अपनी कोठरी में पड़ी हुई देखी है।''

फिर हम दोनों तत्काल कोठरी में चिमनी को तलाशने पहुंचे। कोठरी में दुनिया भर का कचरा और बेकार सामान भरा पड़ा था। तरह-तरह की बोतलें, डिब्बे और ढक्कन इधर-उधर बिखरे हुए पड़े थे। मुझे न जाने कहां एक एक लैम्प शेल्फ पर पड़ा हुआ दिखाई दिया। मिश्का ने उसे तुरंत उतारा। हमें तांबे का पाइॅप और एक डिब्बा भी मिला। इन्हें हम रसोईघर में ले आए। लैम्प को साफ़ करके उसमें मिट्टी का तेल भरा गया। फिर उसे जलाया गया। वह अच्छी तरह जला। उसकी घुंडी को ऐंठ कर हम लौ को तेज़ और हल्का कर सकते थे। सबसे पहले हमने प्लाईवुड का एक बड़ा डिब्बा बनाया। डिब्बा इतना बड़ा था कि उसमें आराम से पंद्रह अंडे आ

सकते थे। हमने उसमें रुई बिछाई जिससे कि अंडे सुरक्षित और गर्म रह सकें। फिर हमने उसके लिए एक ढक्कन बनाया और उसमें थर्मामीटर के लिए एक छेद किया जिससे कि हम तापमान को नोट कर सकें। उसके बाद हमने टीन के डिब्बे में दो छेद किए - एक

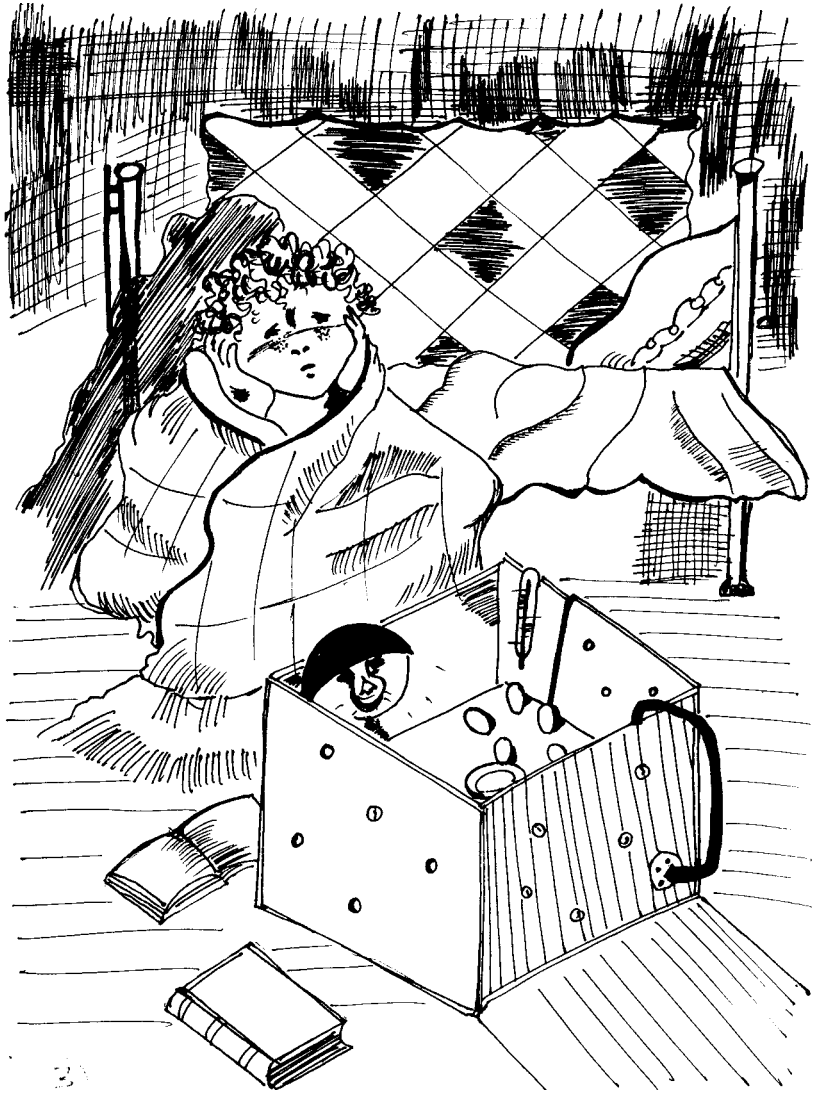

ऊपर और एक नीचे। तांबे के पाइॅप को हमने ऊपर वाले छेद में सोल्डर कर दिया। फिर पाइॅप को इंक्यूबेटर के डिब्बे के अंदर दो-तीन चक्कर मोड़ा और फिर उसे टंकी के निचले छेद में जाकर सोल्डर कर दिया। टेढ़े-मेढ़े पाइॅप से, गर्मी फेंकने वाला एक प्रकार का रेडियेटर बन गया।

फिर मिश्का ने टंकी के नीचे लैम्प को एक डिब्बे पर खड़ा किया। आखिरकार सारी तैयारी पूरी हुई और हमने टंकी को पानी से भरकर लैम्प को जलाया। थोड़ी सी देर में टंकी और पॉइप का पानी गर्म होने लगा और कुछ समय बाद थर्मामीटर 102 डिग्री दिखाने लगा। तापमान शायद और ऊपर जाता परंतु तभी मिश्का की मां आ गईं।

''तुम दोनों यहां क्या शरारत कर रहे हो? पूरे घर में मिट्टी के तेल की बदबू आ रही है,'' उन्होंने डांटते हुए कहा।

जब हमनें उन्हें इंक्यूबेटर बनाने की योजना बताई तो वो बहुत नाराज़ हुईं। मिश्का ने उनसे काफ़ी आरज़ू-मिन्नत की परंतु, उससे कोई फायदा नहीं हुआ। हमारी योजना खटाई में पड़ गई।

जुगाड़ की तलाश

उस रात मैं काफ़ी देर तक सो नहीं सका और इंक्यूबेटर के बारे में सोचता रहा। मेरी मां को तो आग से वैसे ही डर लगता है और वो हमेशा मुझ से माचिस को छिपा कर रखती है। मिश्का की मां ने हमसे लैम्प छीन लिया था और वो किसी भी शर्त पर उसे वापिस देने को तैयार नहीं थीं। बहुत सोचने पर मेरे दिमाग में एक गज़ब का विचार आया। मिट्टी के तेल के लैम्प की बजाए हम बिजली का बल्ब क्यों न इस्तेमाल करें?

मैं झट से उठा और मैंने तुरंत टेबिल-लैम्प जला कर उसके सामने अपनी उंगली रखी। मेरी उंगली जल्दी ही इतनी गर्म हो गई कि मुझे उसे हटाना पड़ा। मैंने दीवार पर से थर्मामीटर को उतार कर बल्ब के सामने रखा। जल्दी ही उसका पारा एकदम ऊपर तक चढ़ गया। बिजली के बल्ब से खूब गर्मी मिलती है इस बात में तो अब कोई शक नहीं था। पर मेरे प्रयोग का नतीज़ा यह हुआ कि उस रात के बाद से मेरे थर्मामीटर ने सही काम करना बंद कर दिया। वह अब हमेशा 104 डिग्री ही दिखाता है। अगर बाहर बर्फ भी पड़ रही हो तो भी वह 104 डिग्री ही दिखाता है। शायद लैम्प के बहुत पास रख कर मैंने उसे हमेशा के लिए खराब कर दिया था।

स्कूल में जब मैंने बल्ब के बारे में मिश्का को बताया तो उसे मेरी बात बहुत पसंद आई। हम दोनों घर वापिस आकर सीधे अपने प्रयोग में जुट गए। मिश्का ने बिजली के लैम्प के नीचे कुछ किताबें रख दीं जिससे कि उसका बल्ब थोड़ा टंकी के पास आ जाए। आधे घंटे में ही तापमान 102 डिग्री पहुंच गया। मिश्का खुशी से चिल्लाया, ''यही तो तापमान हमें चाहिए। बिजली से मिले चाहें मिट्टी के तेल से, हमारी बला से!''

''मेरी राय में बिजली, मिट्टी के तेल से कहीं अच्छी है,'' मैंने कहा, ''क्योंकि मिट्टी के तेल में आग लगने का डर है परंतु, बिजली में ऐसा कोई खतरा नहीं है।'' तभी हमने देखा कि तापमान 104 डिग्री पहुंच गया था।

मिट्टी के तेल की चिमनी की लौ को कम-ज़्यादा किया जा सकता था। परंतु इस बिजली को कम-ज़्यादा कैसे करें? कुछ ही देर में पानी का तापमान 108 डिग्री पहुंच गया।

''बल्ब को ज़रा नीचे कर दो,'' मैंने सोचते हुए कहा। हमने लैम्प

के नीचे से एक मोटी किताब निकाल दी। कुछ देर बाद थर्मामीटर का पारा फिर 102 डिग्री पर उतर आया।

''अब सब कुछ ठीक लगता है और हम लोग अंडे खरीद कर ला सकते हैं,'' मिश्का ने कहा। ''ऐसा करो कि तुम अपने घर से कुछ पैसे ले आओ। जब तक मैं भी अपनी मां से कुछ पैसे मांग कर लाता हूं।''

बहुत गिड़गिड़ाने के बाद मेरी मां ने मुझे कुछ पैसे दे दिए। परंतु उन्होंने मुझ से कहा कि दुकान के खरीदे अंडों में से कभी भी चूज़े निकलेंगे ही नहीं। उसके लिए गांव के ताज़े अंडे चाहिए। मैं दौड़ कर गया और मैंने मिश्का को पूरी बात बताई।

अगले दिन

ज़िंदगी भी कितनी अजीब है। कल तक हमारा कहीं जाने का इरादा नहीं था और आज हम दोनों ट्रेन में बैठ कर नताशा चाची के गांव की ओर जा रहे थे। चाची हमें देख कर बेहद खुश हुईं। उन्हें लगा कि हम लोग उनके साथ कुछ दिनों के लिए रहने आए हैं। उन्हें यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हम उनसे कुछ अंडे लेने आए थे।

''क्या तुम्हारे बड़े शहर में कोई दुकान नहीं है जहां मुर्गी के अंडे मिलते हों?'' उन्होंने पूछा।

''अंडे तो मिलते हैं चाची, परंतु हमें एकदम ताज़े अंडे चाहिए। हम उन्हें अपने द्वारा बनाए इनक्यूबेटर में रखेंगे और उनमें से चूज़ों के निकलने का इंतज़ार करेंगे।''

चाची को हमारी योजना पसंद आई। वह अपने रसोईघर में गईं और तुरंत पंद्रह सुंदर अंडे लेकर आईं। कोई भी उन्हें देख कर कह

सकता था कि वे एकदम ताज़े हैं। उन्होंने अंडों को हमारी टोकरी में रखा और फिर उन्हें एक गर्म शाल से ढंक दिया जिससे कि यात्रा के दौरान वे ठंडे न हो जाएं!

हम चाची को धन्यवाद देकर वापिस घर लौटे। पर तब तक काफी रात हो चुकी थी। हमने प्रयोग को अगले दिन करने की सोची और सो गए।

प्रयोग की शुरुआत

अगले दिन स्कूल से लौटने के बाद सबसे पहले हमने अंडों को इनक्यूबेटर में रखा। हमने ढक्कन लगाया और छेद में थर्मामीटर डाला। लैम्प को जलाने से पहले हमने एक बार सब चीज़ों की जांच करने की सोची। अगर हम इनक्यूबेटर को पहले गर्म करें और फिर उसमें अंडे रखें तो क्या अच्छा नहीं होगा? हमें डर था कि अंडों को डिब्बे में बंद कर देने से कहीं उनका दम नहीं घुट जाए? हमने किताब में पढ़ा था कि अंडे जीवित होते हैं और वह अपने खोल में से सांस लेते हैं। अंडे भी अन्य जीवों की तरह सांस छोड़ते वक्त बाहर कार्बन-डाईआक्साइड गैस फेंकते हैं। जब हमें इस बात का अहसास हुआ तो हमने तुरंत डिब्बे में से संभाल कर अंडे वापिस निकाले और अंडों से निकलने वाली कार्बन-डाईआक्साइड गैस की निकासी के लिए डिब्बे में कुछ छेद बनाएं।

कहीं कोई गल्ती न हो जाए इसके लिए हमने किताब के निर्देशों को दुबारा पढ़ा। उसमें लिखा था कि इनक्यूबेटर के अंदर हवा में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। अगर हवा सूखी होगी, तो अंडे के भीतर की सारी नमी उसकी दीवार और झिल्ली में से निकल कर सूख जाएगी

और उसके अंदर की नन्ही सी जान मर जाएगी। डिब्बे में नमी बनाए रखने के लिए हमने उसके अंदर दो गिलासों में पानी भर कर रखा। पर गिलासों की ऊंचाई डिब्बे से ज़्यादा थी और उसका ढक्कन ही बंद नहीं हो रहा था। अंत में मुझे मिश्का की बहन माया के खेल के दो प्याले दिखाई दिए। हमने उन प्यालों में पानी भर कर रखा और बाद में अंडे रखे। पर प्यालों द्वारा जगह घेर लिए जाने के कारण अब डिब्बे में केवल बारह अंडे ही आए। माया को जब मालूम पड़ा कि हमने उसके प्याले चुराए हैं तो वह अपने प्यालों के लिए रोने लगी। हमने उसे खूब प्यार से मनाया और उसे एक चूज़ा देने का वायदा किया।

''मैं जो कुछ भी करता हूं उसमें ज़रूर फेल होता हूं,'' मैंने कहा। मिश्का ने भी कुछ ऐसी ही दलील दी। अंत में हमने माया से बल्ब का स्विच ''आन'' करने को कहा। शुरू में तो थर्मामीटर का पारा 64 डिग्री पर था। इसलिए हमने बल्ब को टंकी के और पास करने के लिए एक और किताब घुसा दी। परंतु थोड़ी ही देर में तापमान बढ़ता गया और 104 डिग्री तक पहुंच गया।

''तापमान को बढ़ना रोको,'' मिश्का चिल्लाया। हमने लैम्प के नीचे से एक मोटी किताब निकाल ली और उसकी जगह एक पतली कापी लगा दी। इस बीच हम टकटकी लगाए लगातार थर्मामीटर को देखते रहे।

''हम 21 दिनों तक तापमान को 102 डिग्री पर कैसे बनाए रखेंगे?'' मिश्का ने पूछा।

''अगर हम तापमान को स्थिर नहीं रख पाए तो फिर सब करा-कराया बेकार हो जाएगा,'' मैंने कहा।

पूरे दिन हम इनक्यूबेटर के पास ही बैठे रहे और थर्मामीटर को

देखते रहे। हमने स्कूल का होमवर्क भी वहीं बैठ कर किया।

''सब कुछ ठीक चल रहा है,'' मिश्का ने कहा, ''अगर ऐसा ही चलता रहा तो इक्कीस दिनों में हमारे पास बारह मुर्गी के चूज़े होंगे! कितना मज़ा आएगा तब!''

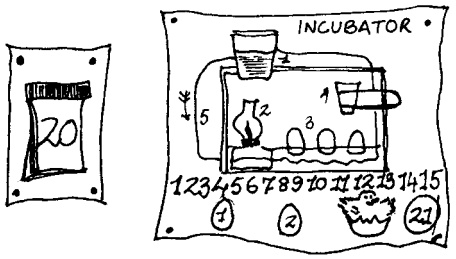

तापमान गिरता है

मुझे और लड़कों के बारे में तो नहीं मालूम परंतु मुझे इतवार वाले दिन देर तक सोना पसंद है। हफ्ते में एक दिन थोड़ी देर तक सोना पसंद है। हफ्ते में एक दिन थोड़ी अधिक देर सोना कौन सा बड़ा ज़ुर्म है? उस दिन जब मैं सो कर उठा तो दिन निकल आया था। मैं दुबारा सोने जा रहा था कि मुझे इनक्यूबेटर की याद आई और मैं लपक के मिश्का के घर पहुंचा। उसकी आंखे फूली हुई थीं जैसे कि वो पूरी रात सोया ही न हो।

''रात को सोते समय सब ठीक-ठाक था। पर बीच में जब मैं उठा तो मैंने देखा कि तापमान 101 डिग्री हो गया है। मैंने तुरंत एक कापी घुसा दी और तापमान 102 डिग्री हो गया। दुबारा जब मैं उठा तो फिर तापमान 101 हो गया था। मुझे एक कापी और लगानी पड़ी। अभी तो सब ठीक लग रहा है परंतु कब तापमान फिर से गिरने लगे इसका कोई भरोसा नहीं,'' मिश्का ने कहा।

मैंने मिश्का से थोड़ी देर सोने को कहा और फिर मैं *कुक्कुट पालन* की किताब पढ़ने लगा। उसमें लिखा था कि अगर अंडों को एक ही स्थिति में रहने दिया जाए तो अंदर का भ्रूण एक जगह पर अंडे के खोल से चिपक जाता है, और फिर चूज़े कमज़ोर पैदा होते हैं। इसलिए मैंने अंडों को उल्टा करना शरू किया। इतने में मिश्का जग गया और कूद कर मेरे पास आया।

''क्या कर रहे थे तुम?'' वह चिल्लाया।

उसका चिल्लाना सुन कर उसके माता-पिता भी आ गए। उन्होंने भी कहा कि मुर्गी अपने अंडों को सेते समय उनकी स्थिति को बदलती रहती है। इसलिए हमें भी कुछ-कुछ समय बाद अंडों को उलटना चाहिए।

तापमान बढ़ता है

दस बजे तापमान कोई एक डिग्री बढ़ गया और हमने तुरंत एक कापी निकाल दी।

''समझ में नहीं आता है कि सारी रात तापमान गिरता रहता है और अब वह ऊपर जा रहा है,'' मिश्का ने कहा और सोफे पर लेट कर सो गया। मैंने भी वहीं कुर्सी पर बैठकर एक किताब पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद कमरे में मिश्का का दोस्त कोत्सया आया और उसने उसे जगाया। उठते ही मिश्का इनक्यूबेटर के पास गया और मुझ पर ज़ोर से चिल्लाया, ''तुम्हे कुछ होश है। तापमान 103 डिग्री है। अगर मैं नहीं उठता तो शायद 104 डिग्री हो गया होता। तुम्हारा ध्यान कहां है?''

कोत्सया ने इनक्यूबेटर देखा और वह भी हमारी मदद के लिए रुक गया। आठ बजे हमें अंडों को उलटना था। जब मिश्का अंडों को उलट रहा था तभी माया आई और उसने सबसे बड़े अंडे की तरफ इशारा करके कहा कि यह उसका अंडा है। इसमें से निकला चूज़ा उसका होगा।

''अंडों पर तुम निशान लगा दोगे तो तुम्हें पता रहेगा कि कौन से अंडे उलटे गए हैं और कौन से नहीं,'' कोत्सया ने सुझाया।

मिश्का ने तुरंत पेंसिल से सब अंडों पर नंबर डाल दिए। कोत्सया से जाते समय मिश्का ने कहा, ''स्कूल में किसी को भी इस इनक्यूबेटर के बारे में नहीं बताना।'' कोत्सया इसके लिए राज़ी हो गया।

माया की ड्यूटी लगी

थर्मामीटर पर नज़र रखने के कारण मिश्का रात को बिल्कुल भी सो नहीं पा रहा था। यह तो समझ में आ रहा था कि रात को बाहर की ठंड के कारण तापमान गिर जाता है और दिन में धूप के कारण तापमान बढ़ जाता है। अब सवाल यह था कि स्कूल के समय तापमान पर कौन नज़र रखे। मिश्का ने माया को उसकी गैरहाज़िरी के समय तापमान पर नज़र रखने के लिए मना लिया। उसने तापमान नियंत्रित

करने का तरीका भी माया को बार-बार समझाया। उसके बाद मैंने माया को अंडों को उलटने का तरीका कर के दिखाया। जब माया को सब कुछ समझ में आ गया तब हम स्कूल गए।

''कैसा चल रहा है तुम्हारा इनक्यूबेटर?'' कोत्सया ने मिलते ही पूछा। उससे रहा न गया।

''तुमने वादा किया था कि तुम इनक्यूबेटर के बारे में किसी को नहीं बताओगे,'' मिश्का ने उसे धमकाया।

क्लास में मिश्का का मन बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। वह सोचने लगा - अगर माया ने कुछ गड़बड़ कर दी तो सब कुछ कबाड़ा हो जाएगा। माया अभी छोटी है अगर वो बाहर खेलने चली गई तो फिर तो खेल खत्म!

कोत्सया अपने वायदे को निभा नहीं सका। जब जीव-शास्त्र की क्लास शुरू हुई तो उसने अपना हाथ उठा कर प्रकृति-क्लब की टीचर से पूछा, ''मारिया पेट्रोवना, यह इनक्यूबेटर क्या होता है?''

मारिया इनक्यूबेटर के बारे में समझाने लगीं। उन्होंने बताया कि पुराने ज़माने में लोग अंडों को एक निश्चित तापमान पर रखते थे और कुछ दिनों बाद उनमें से चूज़े निकल आते थे।

''मैं दो लोगों को जानता हूं जिन्होंने घर पर ही एक इनक्यूबेटर बनाया है,'' कोत्सया ने कहा, ''पर आपको क्या लगता है कि उसमें से चूज़े निकल पाएंगे?''

''घर में बनाए इनक्यूबेटर में सभी अंडों से चूज़े बन सकते हैं, परंतु यह एक बहुत मुश्किल काम है,'' मारिया पेट्रोवना ने कहा, ''फैक्ट्री में बने इनक्यूबेटरों में तापमान और नमी को यंत्रों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। अगर तुम्हारे मित्र मेहनत और लगन से काम करेंगे तो वो

अवश्य सफल होंगे। परंतु अगर कोल्या और मिश्का जैसे लोग इनक्यूबेटर बनाएंगे तो मुझे नहीं लगता है कि उसमें से कुछ निकलेगा।''

स्कूल खत्म होने के बाद प्रकृति-क्लब के मॉनीटर वित्या ने हमें पकड़ा और कहा कि आज क्लब में काम करने की हमारी बारी है। हमें चिड़ियों के लिए लकड़ी के छोटे घर बनाने हैं।

''हमारे पास आज बिल्कुल भी समय नहीं है,'' मिश्का ने कहा। वित्या हम पर बहुत नाराज़ हुआ।

हम दौड़े-दौड़े घर आए। माया ने अपना काम बहुत मुस्तैदी से किया था। हमने उसका शुक्रिया अदा किया और उसे बाहर खेलने के लिए भेज दिया।

बरबादी !

अब हमारी ज़िंदगी काफी नियमित हो गई थी। थर्मामीटर पर नज़र गढ़ाए रखना और हर तीन घंटों के बाद अंडों को उलटना। फिर टंकी और प्यालों में समय-समय पर पानी भरना, क्योंकि गर्मी के कारण पानी जल्दी से सूख जाता था। हर रोज़ रात को मैं घड़ी का अलार्म लगा कर सोता जिससे कि मैं मध्य-रात्रि को उठ सकूं। फिर मुझे रात को नींद ही नहीं आती थी। हर रोज़ सुबह उठते मेरी आंखें फूली होती थीं। किसी तरह मैं कपड़े पहन कर स्कूल जाता था। नींद में कभी-कभी आस्तीनों में पैर डाल देता था या और कोई उल्टा-पुल्टा काम कर बैठता था। स्कूल में मेरे साथी मेरा मज़ाक उड़ाते थे।

दसवीं रात को एक हादसा हुआ। मैं रात को जो सोया तो बस सुबह को ही उठा। जाकर देखा तो तापमान केवल 99 डिग्री यानि 3 डिग्री कम था। मैंने जल्दी से दो कापियां घुसाईं परंतु मुझे लगा कि उससे

कुछ फायदा नहीं होगा। दस दिनों की मेहनत पर पानी फिर गया।

कुछ देर में तापमान 102 डिग्री हो गया। तभी मिश्का आ गया। मैंने उसे कुछ भी नहीं बताया। पर मुझे ऐसा लगने लगा कि अब सब कुछ करना बेकार है।

कक्षा की मीटिंग

रोज़ाना कोत्सया स्कूल में जाकर वित्या को इनक्यूबेटर के बारे में खबर देता था। यही गनीमत थी कि उसने अभी तक मेरा और मिश्का का नाम नहीं बताया था।

''काश ऐसे कर्मठ लोग हमारे प्रकृति-क्लब में होते, तो कितना अच्छा होता,'' वित्या ने कहा।

इनक्यूबेटर के कारण हमारी पढ़ाई में काफी हर्ज़ा हुआ था।

इसका नतीज़ा यह हुआ कि अंकगणित के टेस्ट में मुझे 5 में से केवल 2 नंबर ही मिले। क्लास टीचर ने एक दिन हम दोनों को बहुत डांटा। उन्होंने कहा, ''मुझे मालूम हे कि मिश्का और कोल्या आजकल अपना होमवर्क नहीं कर रहे हैं। क्लास में भी वे पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं देते हैं। बस एक-दूसरे से कुछ-न-कुछ बातचीत करते रहते हैं। कभी-कभी तो वे कक्षा में ही सो जाते हैं।''

जब हम दोनों की जमकर डांट पड़ रही थी तभी कोत्सया ने उठ कर कहा, ''यह इन दोनों की गल्ती नहीं है। यह वह दोनों लड़के हैं जिनकी बात मैं कर रहा था। इन्होंने ही बड़ी मेहनत से घर में इनक्यूबेटर बनाया है।''

मिश्का और मैंने इनक्यूबेटर बनाया है, और उस पर हमारी प्रयोग ज़ारी है इस बात को सुनकर पूरी क्लास दंग रह गई। किसी को यकीन नहीं हुआ कि हम भी कुछ ऐसा करने लायक थे।

''कितने शर्म की बात है कि इन दोनों ने इनक्यूबेटर बनाया और किसी को बताया भी नहीं। हमें इनकी मदद करनी चाहिए,'' वित्या ने कहा।

पूरी क्लास के बच्चे इसके लिए राज़ी हो गए। वित्या ने रात को खाने के बाद मिश्का के घर आकर इनक्यूबेटर को देखने का वायदा किया।

स्कूल के बच्चों द्वारा मदद

रात को खाने के बाद स्कूल के प्रकृति-क्लब के लगभग सभी सदस्य हमारे रसोईघर में मौज़ूद थे। हमने उनको इनक्यूबेटर दिखाया और उसमें अंडों को गर्म रखने और उन्हें समय-समय पर उलटने

की पूरी विधि समझाई। उसके बाद एक सूची बनाई गई और मदद करने वाले बच्चों को विस्तार से उनकी ड्यूटी के बारे में समझाया गया। स्कूल के बाद हर रोज़ दो बच्चे हमारी मदद के लिए आएंगे। मैं और मिश्का उन्हें काम समझाएंगे। यह बच्चे भी बारी-बारी से खाने के लिए और स्कूल का काम करने के लिए घर जाएंगे। रात की ड्यूटी के लिए भी टीमें तैयार हो गईं।

आज वित्या और जेन्या की ड्यूटी थी। उन्होंने मुझ से और मिश्का से जाने को कहा। फिर मिश्का और मैंने बहुत दिनों का छूटा स्कूल का काम पूरा किया। गणित का एक सवाल तो हमें आ गया परंतु दूसरा बहुत झक मारने के बाद भी नहीं आया। तब हम जेन्या से दूसरे सवाल का हल पूछने गए। मैं और मिश्का हिसाब लगा रहे थे कि हमारी ड्यूटी कब लगेगी। वह सबसे अच्छे दिन लगी - इक्कीसवें दिन - जिस दिन अंडों में से चूज़ों को बाहर निकलना था।

अंतिम तैयारी

मुझे और मिश्का को आखिर कुछ चैन मिला। दरअसल हम इनक्यूबेटर के थर्मामीटर को ताकते-ताकते काफी ऊब गए थे। हमने अब प्रकृति-क्लब में लकड़ी के दो चिड़ियाघर बनाए और स्कूल में फूलों और फलों के पेड़ भी लगाए। और जब अगले टेस्ट में हम दोनों के अच्छे नंबर आए तो हमारे मां-बाप भी खुश हुए। जो बीज हमने बोए थे उनमें से छोटे अंकुर बाहर निकल आए थे। परंतु अंडों में से निकलने वाले चूज़ों के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं था।

शुक्रवार वाले दिन हमारी ड्यूटी लगी। हम उसके एक दिन पहले से ही आतुर हो रहे थे। परंतु अन्य लोगों ने हमें इनक्यूबेटर के पास जाने ही नहीं दिया। हमने उनसे बहुत मिन्नतें करीं। अंत में वे मान गए कि अगर अंडों में से चूज़े बाहर निकलने लगे तो वे हमें ज़रूर बुला लेंगे।

जब मेरी और मिश्का की बारी आई तो मिश्का को लगा जैसे कि अंडों के अंदर से कोई हल्की सी आवाज़ आ रही हो। मिश्का ने एक अंडा बाहर निकाला और उसे कान से लगाकर उसकी आवाज़ सुनने लगा। इतने में दरवाज़े की घंटी बजी और मिश्का के हाथ से अंडा गिरते-गिरते बचा। वित्या यह जानना चाहता था कि क्या चूज़े निकलना शुरू हो गए हैं। हम लोग काफी देर बैठे रहे और फिर हमें स्कूल जाना पड़ा। हमें डर लगा रहा कि अगर हमारी गैरहाज़िरी में चूज़े निकलने लगे तो सब काम का बोझ छोटी माया के सिर पर आ पड़ेगा।

हमें नहीं पता कि स्कूल में कैसे हमने अपना दिन काटा। कक्षा में

किसी का भी ध्यान पढ़ाई में नहीं लग रहा था। सब लोग बस इसी इंतज़ार में थे कि छुट्टी की घंटी बजे। स्कूल खत्म होने के बाद हम दौड़ते हुए घर आए। मिश्का ने फौरन आकर इनक्यूबेटर का ढक्कन उठाया। अंडे सफेद पत्थरों की तरह डिब्बे के अंदर पड़े हुए थे। कोई भी अंडा नहीं फूटा था।

गल्ती आखिर किसकी?

सब लड़के चुपचाप खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि अंडों में से चूज़े कभी निकलेंगे ही नहीं। लोग मिश्का से पूछ रहे थे कि क्या होगा?

''मुझे क्या मालूम, मैं कोई मुर्गी हूं,'' मिश्का ने टका सा जवाब दिया। सब लोग अपनी-अपनी अटकलें लगाने लगे। कुछ कहते कि चूज़े निकलेंगे और कुछ कहते कि नहीं।

अभी दिन पूरा नहीं हुआ था और अंडों में से चूज़े निकलने की संभावना थी। शायद कहीं हमने दिन गिनने में कोई गल्ती तो नहीं कर दी है? मेरे दिल में उस रात का हादसा बार-बार खटक रहा था, जब मैं घड़ी का अलार्म सुनने के बाद भी नहीं उठा था और तापमान 99 डिग्री तक उतर आया था। मेरी आत्मा मुझे बार-बार कचोट रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि मैं ही उन निरीह चूज़ों का कातिल हूं। मैं उस रात को अपनी मां से इज़ाज़त लेकर मिश्का के घर पर ही सोया।

सुबह को जब हम उठे तो सब कुछ वैसा का वैसा ही था। अंडे इनक्यूबेटर में पड़े थे। न तो कोई चटखा था और न ही किसी में से कोई आवाज़ ही आ रही थी।

जब कोई उम्मीद नहीं बची

वह उदास दिन न जाने कैसे बीता। रसोईघर में स्थिति वैसी ही थी - इनक्यूबेटर गर्म था, लैम्प जल रहा था, परंतु हमारी उम्मीदें एकदम ठंडी पड़ी थीं। तभी मिश्का ज़ोर से चीखा। उसके हाथ में एक अंडा था और अंडा थोड़ा सा टूटा हुआ था।

''कहीं निकालते वक्त अंडा किसी चीज़ से टकरा तो नहीं गया?'' मैंने पूछा। फिर मैंने अंडे के छिलके को थोड़ा सा हटा कर देखा और उसमें से एक पीली सी चोंच बाहर निकली और फिर अंदर चली गई। हम खुशी से इतने पागल हो गए कि हमारे मुंह से कोई शब्द ही नहीं निकला। बस हम दोनों एक-दूसरे से लिपट गए।

मिश्का दौड़ कर और लड़कों को इस खुशी की खबर देना गया।

''तुम अंडे को अपने साथ लेकर नहीं जाओगे!'' मैंने सख्त आवाज़ में कहा। उसने तुरंत अंडा वापिस रख दिया।

इतनी देर में कोत्सया आ गया। उसकी खुशी का ठिकाना ही न रहा। वह भी औरों को बुलाने के लिए दौड़ा। इतनी देर में मैं अपनी

मां को खबर देने के लिए दौड़ा।

कुछ ही देर में मिश्का के मां-बाप भी आ गए। मिश्का ने मेरे हाथ में जब अंडे को देखा तो वो बौखला उठा। ''अंडे को तुरंत इनक्यूबेटर में रख दो नहीं तो चूज़े को ज़ुकाम हो जाएगा,'' वह चिल्लाया।

''क्या अन्य किसी अंडे में क्रैक नहीं पड़ा है,'' वित्या ने पूछा।

''केवल नंबर 5 वाला अंडा फूटा है,'' मिश्का ने मुआयने के बाद कहा।

''अंडे के अंदर चूज़े को कितनी तकलीफ हो रही होगी। चलो हम अंडे के खोल को हटा कर चूज़े को बाहर निकाल देते हैं,'' जेन्या ने कहा।

''नहीं, नहीं। चूज़े के पंख बहुत नाज़ुक होते हैं और ऐसा करने से उन्हें नुकसान हो सकता है,'' मिश्का ने कहा। इतनी देर में 11 नंबर वाला अंडा भी फूट गया था। सभी लोग इनक्यूबेटर सक चिपके बैठे थे। रात को करीब दो बजे 8 और 10 नंबर वाले अंडे भी फूट गए। उस समय सबसे बड़ा आश्चर्य था - इनक्यूबेटर के अंदर एक चूज़ा। वह खड़ा होने की कोशिश कर रहा था परंतु बार-बार गिर जाता था।

मैंने चूज़े को हथेली में उठाया। वह अभी भी गीला था और पंखों की जगह उसके नरम रोएंदार बाल थे। मिश्का एक डिब्बा लाया और मैंने चूज़े को उसमें रख दिया। डिब्बे को गर्म पानी पर रखा जिससे कि चूज़े के पंख जल्दी सूख जाएं। कितनी आश्चर्य की बात है कि इतना बड़ा चूज़ा इतने छोटे से अंडे में समा जाता है।

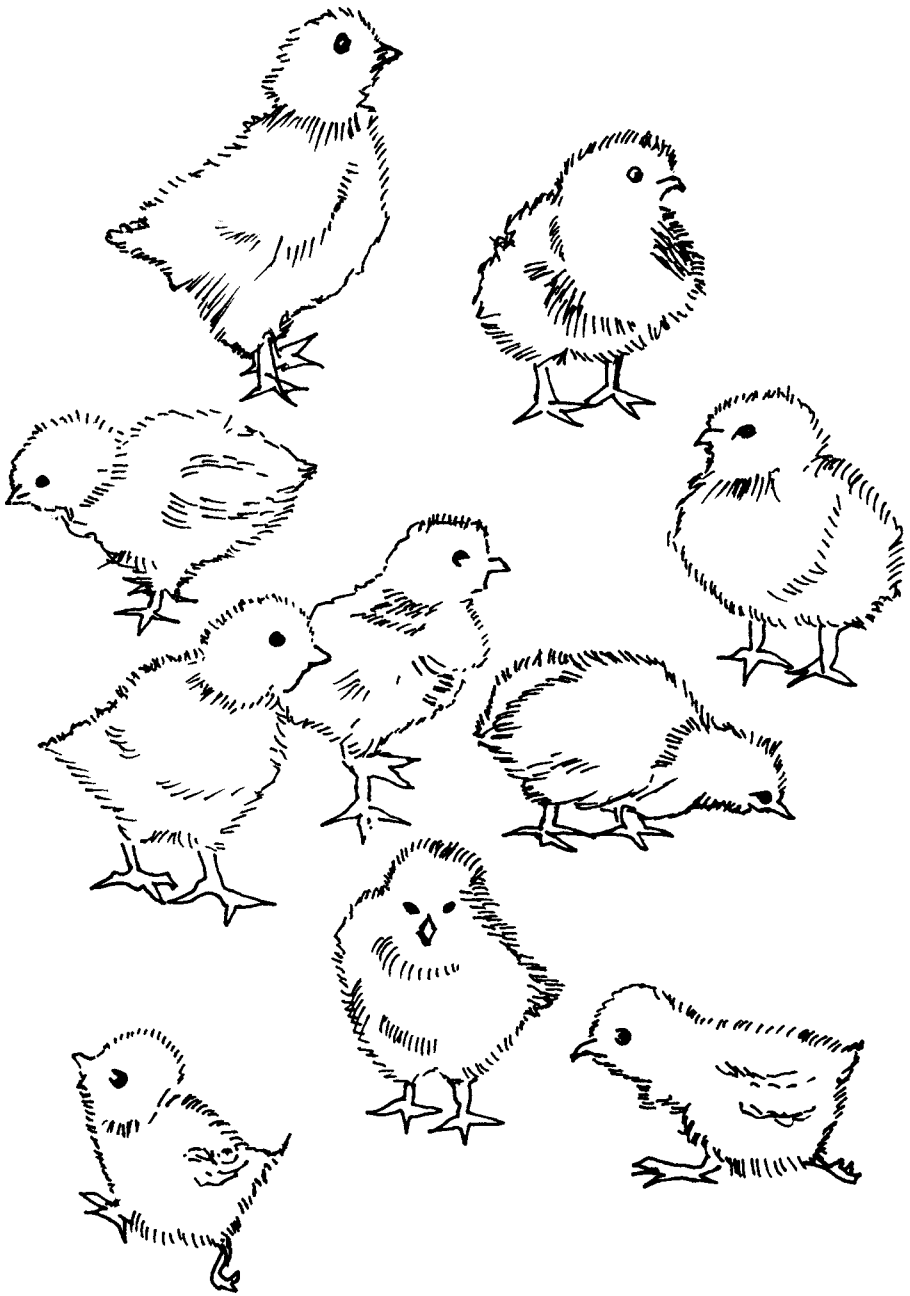

हमारी गल्ती

हम लोग अपने काम में इतने मगन थे कि सुबह कब हुई इसका हमें पता ही नहीं चला। सूरज की किरणें अब रसोईघर के फर्श पर पड़ रही थीं।

जल्दी ही सब लड़के भी आ गए। जेन्या और कोत्सया सबसे पहले आए।

''आओ प्रकृति का एक अजूबा देखो,'' मिश्का ने कहा। लड़के गंभीरता से चूज़े का मुआयना करने लगे। जेन्या ने मिश्का से जाकर सोने को कहा। पूरी रात जागने के कारण मिश्का की दोनों आंखें लाल हो गईं थीं। इतनी देर में कुछ और अंडों में से भी चूज़े निकल आए थे। मैंने इनक्यूबेटर के अंदर से अंडों के खोल नंबर 4, 8 और 10 बाहर निकाले। पर यह कहना कठिन था कि किस अंडे में से कौन सा चूज़ा बाहर निकला। परंतु नंबर 5 का चूज़ा अभी भी बाहर नहीं निकला था। शायद वह कुछ कमज़ोर था। हमने उसके छेद को कुछ बड़ा किया। उसके अंदर चूज़ा दिखाई भी दिया। वह ज़िंदा था ओर अपना सिर हिला रहा था। उसे हमने दुबारा इनक्यूबेटर के अंदर रख दिया।

पर अंडों के फूटने के लिए हमें एक दिन इंतज़ार क्यों करना पड़ा? कहीं हमने हिसाब में कोई गल्ती तो नहीं कर दी थी? और वास्तव में जब हमने दुबारा और सही तरीके से दिनों को गिना तो हमें अपनी गल्ती का अहसास हुआ। हम गिनते समय एक दिन खा गए थे। अगर हमने ठीक तरह से गिना होता तो हमें इतनी परेशानी नहीं उठानी पड़ती।

जन्मदिन

दिन खत्म होने तक हमारे गर्म तसले में दस चूज़े इधर-उधर दौड़ रहे थे। नंबर 5 वाला सबसे आखिर में निकला था। हमें अंडे के खोल को थोड़ा तोड़ना पड़ा जिससे कि बाहर निकलने में उसे कुछ आसानी हो। वह अन्य चूज़ों से छोटा और कमज़ोर लग रहा था। शाम तक इनक्यूबेटर में केवल दो अंडे ही बाकी बचे थे। हमने लैम्प को रात भर जला छोड़ा लेकिन शायद उससे भी कुछ फायदा नहीं हुआ।

दसों चूज़ों ने अपनी रात गर्म तसले में बड़े मज़े में बिताई। उनमें से कुछ अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहे थे जबकि बाकी तेज़ी से दौड़ रहे थे। वह अपनी चोंच को तसले से मार रहे थे जैसे कि वह कुछ चुगने की कोशिश कर रहे हों।

''ऐसा लगता है जैसे इन्हें भूख लगी है,'' मिश्का ने कहा। हमने जल्दी से एक अंडे को उबाल कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके उन्हें ज़मीन पर बिखरा दिया। परंतु चूज़ों ने उन्हें बिल्कुल नहीं खाया। फिर मिश्का ने अपनी उंगली से ज़मीन पर टप-टप किया। चूज़े भी उसकी नकल करने लगे और खाने लगे। हमने एक कटोरे में पानी भी रखा जिसे उन्होंने फौरन पी लिया।

उस दिन सब बच्चों ने स्कूल में प्रकृति-शास्त्र की शिक्षका मारिया पेट्रोवना को चूज़ों के बारे में बताया। यह तय हुआ कि सब बच्चे चूज़ों के जन्मदिन पर कुछ न कुछ उपहार लाएंगे। और सब बच्चे चूज़ों के जन्मदिन की पार्टी मनाने आएंगे।

मैं और मिश्का बच्चों के आने का और उनके उपहारों का इंतज़ार करते रहे। कुछ बच्चे तो फूल लाए। सद्भावनाएं व्यक्त करने का यह

एक अच्छा तरीका था। परंतु मारिया पेट्रोवना एक बोतल में छाछ लेकर आईं। छाछ को जैसे ही प्याली में डाला गया चूज़े उसे गटागट पी गए। ल्योश्का चूज़ों के लिए एक झुनझुना लेकर आई। कोत्सया एक डिब्बे में चावल लेकर आया। चावल के दाने तो चूज़े झटपट खाने लगे। मारिया ने लड़कों को बताया कि चूज़ों को ताज़ी हवा चाहिए। फिर हमने मारिया को इनक्यूबेटर के अंदर पड़े दो अंडे दिखाए और उनके बारे में पूछा।

''मुझे लगता नहीं कि अब इनमें से चूज़े निकलेंगे,'' उन्होंने कहा।

कुछ दिनों तक रोज़ शाम को बच्चे चूज़ों को देखने के लिए आते। परंतु शहर में चूज़ों को रखना एक कठिन काम था। इसलिए पंद्रह दिनों के बाद एक दिन मैंने और मिश्का ने चूज़ों को एक टोकरी में रखा और उन्हें नताशा चाची के पास ले गए। हम नताशा चाची से ही तो अंडे मांग कर लाए थे और अब हम उन्हीं को उनकी अमानत लौटाने जा रहे थे। गांव की खुली जगह और साफ़ हवा में चूज़े भी खुश नज़र आ रहे थे।

❐❐❐